कथा
कहानी

कथा-कहानी

सन्तराम वत्स्य

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

मूल्य : ०.६० पैसे
दूसरा संस्करण : १९६८

चित्रकार : नरेन्द्र श्रीवास्तव

प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२/३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली

मुद्रक : भारत मुद्रणालय, दिल्ली-३२

क्रम

ख़तरा : ५
परीक्षा का समय : ९
कुसंगति का फल : १२
हाज़िर जवाब : १६
जैसी करनी वैसी भरनी : २२
न इधर के रहे, न उधर के रहे : २८

ख़तरा

सुशीला और निर्मल एक ही पाठशाला में और एक ही कक्षा में पढ़ते थे। दोनों के घर भी पास-पास थे। निर्मल पाठशाला चलता तो सुशीला को आवाज दे लेता। दोनों इकट्ठे जाते और पाठशाला में भी इकट्ठे बैठते। खेलते भी साथ-साथ और खाते भी साथ-साथ।

छमाही परीक्षा हुई तो गणित में निर्मल को सबसे अधिक नम्बर मिले। हिन्दी में सुशीला सबसे आगे बढ़ गई।

निर्मल ने सोचा—गणित मुझे खूब आता है। अब उसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। हिन्दी में मेरे सुशीला से कुछ नम्बर कम हैं। अब

मैं सारा समय हिन्दी की तैयारी में लगाऊँगा। वार्षिक परीक्षा में हिन्दी में उससे भी अधिक नम्बर लेकर दिखाऊँगा।

सुशीला ने सोचा—हिन्दी के साथ-साथ मैं अब गणित पर भी पूरा-पूरा ध्यान दूँगी। जब वार्षिक परीक्षा होगी तो हिन्दी के साथ-साथ गणित में भी मुझे अच्छे नम्बर मिलेंगे।

वार्षिक परीक्षा हुई। आज परीक्षा का परिणाम सब छात्रों को सुनाया जाएगा। सभी अपना-अपना परिणाम सुनने के लिए उतावले हो रहे थे। खूब हो-हल्ला मचा हुआ था।

निर्मल और सुशीला भी उतावले हो रहे थे। मुख्याध्यापक जी ने सुनाया—सुशीला पास, निर्मल फेल।

बाद में पता लगा कि निर्मल का एक भी सवाल ठीक नहीं निकला। यही उसके फेल होने का कारण था। उसने छमाही परीक्षा के बाद गणित की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया था! उधर सुशीला हिन्दी और गणित दोनों पर पूरा ध्यान देती थी।

मुख्याध्यापक जी ने सब छात्रों को इकट्ठा करके कहा—बच्चो! निर्मल छमाही परीक्षा में गणित में

सबसे अधिक नम्बर ले गया था किन्तु वार्षिक परीक्षा में इसका एक भी सवाल ठीक नहीं है। इसने अपने मन में सोचा होगा—गणित मुझे खूब आता है। अब उसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। यह तो बिल्कुल उस हिरन वाली ही बात हुई—

एक काना हिरन था। एक आँख से उसे बिल्कुल नहीं सूझता था।

वह प्रतिदिन नदी के किनारे के जंगल में चरा करता। वह सोचता—जंगल के बीच चरना ठीक नहीं। शिकारी कुत्तों का डर, बाघ-चीते का डर। और दोनों आँखें ठीक होतीं तो और बात थी; एक आँख से तो एक ओर का ही ध्यान रखा जा सकता था और फूटी आँख की तरफ से कोई आ गया तो मारा जाऊँगा।

समुद्र के किनारे की बात ही दूसरी है। फूटी आँख पानी की तरफ की और चरते रहे। उस तरफ से न तो शिकारी कुत्ते आ सकते हैं और न बाघ-चीता ही। और अगर जंगल की ओर से कोई आया भी तो उसे अच्छी आँख से देखते ही भाग जाऊँगा।

वह अपनी इस नई सूझ पर फूला न समाया। मन में सोचता—मैंने भी कितनी बढ़िया तरकीब

सोच निकाली है ।

अब वह बेखटके कानी आँख समुद्र की ओर करके चरता रहता। दूसरी ओर से किसी को आते देखता तो पलक मारते ओझल हो जाता ।

एक दिन कुछ शिकारी नाव में बैठकर समुद्र के किनारे-किनारे सैर कर रहे थे । उनके पास बंदूक, गोली-बारूद सारा सामान था।

उनकी नज़र इस हिरन पर पड़ी। इनमें से एक ने बंदूक उठाई, गोली दाग दी । गोली निशाने पर लगी थी । हिरन मर गया।

उसने मरते-मरते कहा—'जिस ओर से मैं निश्चिन्त था, उसी ओर से मौत आई ।'

तो ठीक यही बात निर्मल के साथ भी हुई !

परीक्षा का समय

विनोद : "मनोहर भैया ! तुम अजीब आदमी हो। जब देखो पढ़ रहे हो। सचमुच तुम तो किताबी कीड़े हो। खेल-कूद का तो नाम ही नहीं लेते हो। अभी तो परीक्षा को पूरे तीन महीने पड़े हुए हैं ! ऐसी क्या मारा-मारी है ? मैं तो परीक्षा से कुछ दिन पहले ही पढ़ाई पर जोर देता हूँ···।"

"और फेल भी तभी होते हो।" बीच ही में टोकते हुए मनोहर ने कहा।

"फेल-पास होना तो भाग्य की बात है। इसमें कोई कर ही क्या सकता है ?" विनोद बोला।

"भाग्य की बात नहीं, मेहनत की बात कहो।

पाठशाला में प्रतिदिन ठीक समय पर आया जाए और ध्यान से पढ़ा-लिखा जाए तो कोई भी फेल न हो। दिन भर खेलते रहने से तो पाठ याद नहीं हो जाएगा। समय पर ही खेलना चाहिए। मैं भी तो प्रतिदिन खेलता हूँ। और पढ़ता भी हूँ। खेलने के समय खेलो और पढ़ने के समय पढ़ो। सो मित्र, मैं तो कहता हूँ कि तुम अभी से पढ़ने और खेलने के लिए समय निश्चित कर लो। नहीं तो अब की बार फिर रह जाओगे और पीछे पछताओगे। तुमने उस सुअर वाली कहानी नहीं सुनी है ?"

"कौन-सी सुअर वाली कहानी ? मुझे तो मालूम नहीं।" विनोद ने उत्तर दिया।

अच्छा तो सुनो—"सुअर तो तुमने देखे ही होंगे। पालतू सुअरों से जंगली सुअरों के दाँत ज्यादा बड़े होते हैं। एक सुअर वृक्ष की जड़ से अपने दाँतों को रगड़ रहा था। उसे दाँत घिसते देखकर एक गीदड़ ने कहा—'सुअर चाचा, अभी से दाँतों को तेज कर रहे हो, इस समय लड़ाई-झगड़े की तो कोई बात है नहीं ?'

"जानते हो उस सुअर ने गीदड़ को क्या उत्तर

दिया था ? कहने लगा—'लड़ाई-झगड़ा इस समय नहीं है, इसीलिए तो इन्हें तेज़ कर रहा हूँ। लड़ाई-झगड़े के समय इन्हें तेज़ करने का मौका कहाँ मिलेगा। उस समय तो इस बात की परीक्षा होगी—दाँत तेज़ हैं या नहीं।' तो यही बात पढ़ाई-लिखाई के लिए भी है। अभी पढ़ा जाए तो ठीक होगा। परीक्षा के समय तो यह जाँच होगी कि किसने कितना पढ़ा-लिखा है।"

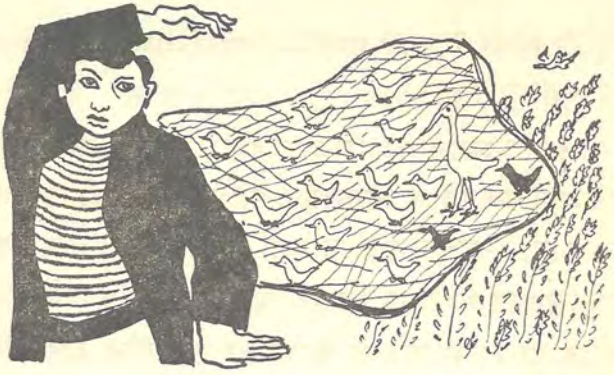

कुसंगति का फल

गोपालपुर गाँव में धन्ना नाम का एक किसान रहता था। उसकी पत्नी का नाम था गुलाबो। उनका एक लड़का भी था। लड़के का नाम था राजू। राजू बड़ा होशियार लड़का था। वह माता-पिता की आज्ञा मानता। उनके साथ घर और खेत में काम करता। न किसी से लड़ता और न किसी को गाली देता।

वे सब मिलकर खेतों में काम करते, बैलों के लिए चारा लाते।

यही उनका प्रतिदिन का काम था। और यही उनकी जीविका। उन्हें इसी से दो समय पेट भर

रोटी और तन ढक कपड़ा मिल जाता। तीनों ही आनन्द से रहते।

एक दिन धन्ना ने देखा कि रामू गाँव के कुछ शरारती लड़कों के पास खड़ा है। बात यह थी कि लड़के गुल्ली-डण्डा खेल रहे थे। रामू उनका खेल देखने खड़ा हो गया था। धन्ना ने रामू को बुलाकर कहा—"बेटा, शरारती लड़कों के पास खड़ा होना ठीक नहीं, तुम सोचो कि यदि गुल्ली किसी लड़के की आँख में जा लगती तो कैसा ऊधम मचता !"

"मैं कोई खेल थोड़े ही रहा था।" रामू ने उत्तर दिया।

"बेटा, तुम खेल रहे थे या नहीं, यह कोई नहीं सुनेगा। मार पड़ेगी तो उन सबको जो वहाँ खड़े थे। इसलिए कहता हूँ कि बुरों की संगत से बचना चाहिए।" धन्ना ने रामू को पुचकारते हुए कहा।

एक दिन धन्ना जब खेत से लौटकर आया तो कुछ उदास-सा था। उस दिन वह खेत पर अकेला ही गया था। क्योंकि रामू अपने मामा के घर गया हुआ था और गुलाबो कपड़े धोने के लिए घर पर ठहर गई थी।

धन्ना रात को चूल्हे के पास बैठा सेंक-सेंककर रोटी खा रहा था।

गुलाबो ने पूछा—"आज इतने उदास क्यों हो ?"

"क्या बताऊँ, पंछियों ने सारा खेत बर्बाद कर दिया, यदि किसी तरह उन्हें रोका न गया तो अब पेट पर पट्टी ही बांधनी पड़ेगी।" धन्ना ने कहा।

"खेत में पंछियों के पकड़ने के लिए जाल क्यों नहीं बिछा देते ? जाल देखकर एक तो बैठेंगे ही नहीं और यदि बैठे तो फँस जाएंगे।" गुलाबो ने सुझाव दिया।

धन्ना ने कहा—"बात तो ठीक है।"

ये बातें हो ही रही थीं कि रामू भी आ गया। उसे जाल लगाने की बात बहुत अच्छी लगी। उसने मन में सोचा कि जो पंछी फँसेंगे, मैं उन्हें घर लाकर पिंजरे में बन्द कर दूंगा। और उनसे खेला करूँगा।

दूसरे दिन मुँह अन्धेरे ही उठकर धन्ना खेत में जाल बिछा आया।

दोपहर को धन्ना और रामू दोनों साथ-साथ देखने गए कि जाल में पंछी फँसे या नहीं।

जब वहाँ जाकर देखा तो रामू प्रसन्नता के मारे उछलने लगा।

किनने ही कबूतर, एक जोड़ा सारस, और कुछ बगुले जाल में फँसे हुए थे।

धन्ना ने एक-एक करके सबको मारना प्रारम्भ किया। जब एक बगुले की बारी आई तो वह कहने लगा--"भाई, मेरा तो कोई अपराध नहीं है। कृपा कर मुझे छोड़ दो। मैंने कभी तुम्हारी खेती-बाड़ी की हानि नहीं की। मैं तो मछलियों को खाता हूँ क्योंकि वे पानी को गन्दा कर देती हैं। मैं पंछियों में सबसे अधिक धर्मात्मा माना जाता हूँ।"

यह सुनकर धन्ना ने कहा—"तुम ठीक कहते हो परन्तु मैंने तुम्हें चोरों के साथ पकड़ा है। इसलिए तुम्हें क्षमा नहीं किया जा सकता।"

हाजिर जवाब

एक था शिकारी ।
उसका निशाना कभी खाली न जाता ।
उड़ती चिड़िया तक को मार गिराता ।
जहाँ कहीं निशानेबाजी की शर्त लगती, वहीं जा पहुँचता ।
उसका निशाना देखकर लोग दाँतों तले उंगली दबा लेते ।
वाह ! वाह !! कर उठते ।
एक दिन वह नदी के किनारे गया ।
वहीं शिकार खेलने लगा ।

वहाँ एक बगुला भगत था।
वह मछलियों का शिकार कर रहा था :
शिकारी ने उसी का शिकार कर डाला।
उठाकर घर ले आया।
रसोइए को आवाज़ दी।
"हंसू, ओ हंसू, कहाँ गया रे।
ले आज रात को इसे बना देना।
ठीक से बनाना।"
"अच्छा जी,"
हंसू ने जवाब दिया।
हंसू बगले को अंगारों पर भूनने लगा।
इतने में उसका एक मित्र आया।
कहने लगा--"हंसू, ओ हंसू !
स्वाद तो चखा इस बगुले का; देखूं तो यह कैसा बना है।"
हंसू ने बगुले की एक टाँग तोड़कर मित्र को दे दी।
मित्र खाकर वाह-वाह करने लगा—"हंसू, यह तो बहुत अच्छा बना है ! तुम तो बहुत अच्छा खाना बनाते हो !"
हंसू ने शिकारी के आगे खाना परोसा। शिकारी ने देखा तो बगुले की एक ही टाँग थी।

हंसू को आवाज दी।
"हंसू, ओ हंसू ! अरे सुनता ही नहीं।"
"आया जी, अभी आया !"
हंसू ने जवाब दिया।
"अरे इसकी दूसरी टाँग कहाँ गई ?
यह देख, एक ही टाँग है।"
"मालिक, आप भी कैसी बात करते हैं ! बगुले के तो एक ही टांग होती है !"
"बकवास करता है !
हमीं को बुद्धू बनाता है !
पकाते-पकाते खा गया होगा !
अरे मैंने क्या बगुले नहीं देखे हैं ?
रोज मारकर लाता हूँ।
मेरे साथ इस तरह झूठ बोलते हो !
तुम्हारी इतनी हिम्मत !
गधा कहीं का !
इस झूठ की तुम्हें ऐसी सजा दूंगा कि याद करेगा।"
"आप मेरी बात पर विश्वास करिये।
आगे क्या मैंने कभी झूठ बोला है ?
मैं सच कह रहा हूँ मालिक !

अच्छा, बहस की क्या बात है !
कल ही दिखा दूंगा।
मेरे साथ नदी किनारे चलियेगा।"
"जो न दिखाया तो फिर ?"
शिकारी ने कहा।
"तो जो काले चोर की सजा, वह मेरी सजा।"
हंसू भी अपनी बात पर डटा रहा।
अब दूसरे दिन की बात सुनिये।
शिकारी और हंसू दोनों नदी के किनारे पहुँचे।
वहां बगुलों की क्या कमी !
बगुले पानी में खड़े मछलियाँ पकड़ रहे थे।
वे दोनों बगुलों के पास जा पहुँचे।
पर यह क्या ?
सभी बगुले एक-एक टांग पर खड़े थे।
जैसे कि वे प्रायः सोते समय एक टाँग पर खड़े रहते हैं।
हंसू खूब खुश था।
उसी की बात सच्ची निकली।
वह फूला न समाया।
कहने लगा—
"अजी, मैंने तो पहले ही कहा था, पर आप तो

माने ही नहीं।
देख लीजिए, मेरी बात सच्ची निकलो न ?"
शिकारी ने देखा—
बगुले एक-एक टांग पर खड़े हैं।
दूसरी टाँग समेटे हुए हैं।
कहने लगा—
"अरे ठहर तो सही !
अभी तुम्हें दूसरी टांग भी दिखाता हूँ। तब तुम्हें
अपनी मूर्खता का पता लगेगा।"
शिकारी ने जोर की ताली बजाई।
फिर क्या था।
बगुलों ने अपनी दूसरी टांग भी खोल दी।
और पंख फैलाकर उड़ने लगे।
अब शिकारी ने हंसू की ओर देखा और कहने लगा—
"अरे बुद्धू, देख लिया न कि उनके दो-दो टांगें हैं?
तुम झूठ बोलकर अपनी जान बचाना चाहते थे।
अब बताओ तुम्हें क्या सजा दूं।"
"पर पहले तो एक ही टांग थी।"
हंसू ने जवाब दिया।
"पर ताली बजाने पर तो दो हो गईं न ?"
शिकारी बोला

"तो कल रात भी आपने ताली बजाई होती तो दूसरी टांग निकल आती।"

हंसू की हाज़िर जवाबी पर शिकारी को हँसी आ गई।

कहने लगा—

"तुम्हारी हाजिर जवाबी ने तुम्हें बचा दिया। नहीं तो आज तुम्हारी खैर नहीं थी।"

जैसी करनी वैसी भरनी

एक था कुक्कड़। उसका नाम था राजा। एक दिन वह गांव के पास कूड़े के ढेर में अनाज के दाने ढूंढ रहा था। उसने कूड़े को अपने पंजों से बिखेरना शुरू किया। अब तो उसे बहुत-से अनाज के दाने और कीड़े-मकोड़े मिलने लगे। वह बड़ी प्रसन्नता से उन्हें एक-एक करके खाने लगा। उस समय उसका सारा ध्यान खाने में लगा हुआ था।

पास ही झाड़ी की ओट में एक बिल्ली छिपी बैठी यह सब कुछ देख रही थी। उसने सोचा कि

कुक्कड़ को पकड़ने का यह बहुत अच्छा अवसर है। यह सोचकर वह चुपके से कुक्कड़ की ओर बढ़ने लगी। वह कुक्कड़ पर झपटना ही चाहती थी कि एक कुत्ते को देखकर जो उसकी ओर लपका आ रहा था, वह झट वृक्ष पर चढ़ गई। यदि क्षण भर कुत्ता न आता तो आज कुक्कड़ जीवित न बचता।

कुक्कड़ ने कुत्ते का धन्यवाद किया और कहा—"हम और तुम आज से मित्र बन गए। यदि आगे को कभी किसी पर कोई आपत्ति आई तो हम एक दूसरे की सहायता करेंगे।"

कुत्ते ने यह बात मान ली। उसी दिन से लेकर वे दोनों साथ-साथ रहने लगे।

अब तो वे एक दूसरे के बिना घड़ी भर भी न रहते थे। रात को भी कुक्कड़ वृक्ष पर सोता तो कुत्ता उसके नीचे ही रहता। इसी तरह बड़े आनन्द से उनके दिन कटने लगे।

कई दिनों के बाद जब कि रात को कुत्ता एक वृक्ष के नीचे सोया हुआ था और कुक्कड़ शाखा पर बैठा था, एक सिंह घूमता हुआ इधर आ निकला। इस समय रात के कोई चार बजने वाले थे। कुक्कड़ अपने स्वभाव के अनुसार जाग चुका था। उसने सिंह

को कुत्ते की ओर आते देख लिया। वह सोचने लगा कि यदि कुत्ते को जगा भी दिया तो भी सिंह उसे छोड़ेगा नहीं। तो फिर क्या किया जाए! बहुत सोच-विचार के बाद अन्त में उसने निश्चय किया कि मैं कम से कम कुत्ते को जगा ही दूं। शायद वह भागकर अपनी जान बचा सके।

अब उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना—बाँग देना—प्रारम्भ कर दिया। उसका चिल्लाना सुनकर कुत्ता झट जाग उठा।

बच्चो! यह तो तुम जानते ही हो कि कुत्ता जल्दी ही सो जाता है और थोड़ा-सा भी शब्द होने पर जाग उठता है।

उधर कुक्कड़ का चिल्लाना सुनकर सिंह भी जंगल की ओर भाग गया।

तुम सोचोगे कि सिंह कुक्कड़ की आवाज सुनकर क्यों भाग गया?

बात यह है कि सिंह स्वभाव से ही कुक्कड़ की आवाज़ से डरता है। इसीलिए वह भाग गया।

कुत्ते ने कुक्कड़ का बड़ा धन्यवाद किया। किन्तु कुक्कड़ कहने लगा—"भाई! इसमें मैंने कौन-सी बड़ी बात कर डाली। मित्र के लिए यदि इतना भी न कर

पाता तो मुझे धिक्कार था। और फिर तुमने भी एक बार बिल्ली से मेरी जान बचाई थी। मैंने तो केवल अपना कर्त्तव्य निभाया है।"

इस घटना के बाद उनकी मित्रता और भी बढ़ गई।

इसके कई दिनों बाद जब फिर वे दोनों रात को उसी वृक्ष के पास—कुक्कड़ ऊपर और कुत्ता नीचे—सो रहे थे, कुक्कड़ ने एक पहर रात शेष रहे, अपने स्वभाव के अनुसार आवाज़—बांग—लगाई। बांग सुनकर कुत्ते की नींद तो खुल गई किन्तु, वह उठा नहीं, उसी तरह सोया रहा।

कुक्कड़ की आवाज़ सुनकर एक गीदड़ ने सोचा—क्यों न आज का कलेवा इस कुक्कड़ से ही किया जाए। बहुत मज़ा आएगा। इसे पकड़ने के लिए कोई उपाय सोचता हूँ।

मन में यह सोचकर वह उस वृक्ष के नीचे चला गया, जिस पर कुक्कड़ बैठा बोल रहा था। गीदड़ ने कुक्कड़ से कहा—"ओहो! बड़ा ही सुन्दर गाते हो। कहो भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

"राजा।" कुक्कड़ ने उत्तर दिया।

"बहुत अच्छा नाम रखा है। तुम हो भी तो राजा

जैसे ही। ईश्वर ने तुम्हें पक्षियों का राजा बनाकर भेजा है। तभी तो तुम्हारे सिर पर यह कलगी है। और रंग भी कितना अच्छा है ! तुम अपने पड़ोसियों को प्रातः ही जगा देते हो। बहुत भले जीव हो। और इन सब गुणों के साथ मिलकर स्वर ने तो कमाल ही कर दिया है। भैया ! मुझे भी गाने-बजाने का बड़ा चाव है। इसी लिए तुम्हारा प्रभाती का स्वर सुनकर आ गया हूँ। सोचा कि दोनों साथ मिलकर गाएँ। तुम नीचे उतर आओ, यहीं बैठकर प्रभाती गाएँ।"

कुक्कड़ उस धूर्त की सारी चालाकी समझ गया। वह जानता था—"धूर्त प्रशंसा के पुल बांधकर ही प्रायः लोगों को ठगते हैं।"

कुक्कड़ ने कहा—"तुमने ठीक ही कहा। हम दोनों ही मिलकर गाएँगे। अच्छा, जरा इधर जाकर हमारे एक मित्र सोए पड़े हैं, उन्हें तो जगा दो। हम दोनों गाएँगे और वे नाचेंगे। यह तो तुम जानते ही हो कि गाना सुन्दर होने पर भी बिना नाच के रस नहीं आता।"

लोभ सभी को अन्धा बना देता है। गीदड़ बिना विचारे कुक्कड़ के बताए स्थान पर चला गया।

उनके इस प्रकार बातचीत करने से अब तक

कुत्ता भली भांति जागकर उठ बैठा था।

ज्यों ही गीदड़ कुत्ते के पास पहुँचा, त्यों ही कुत्ते ने एक छलांग मारकर उसे धर दबाया।

बच्चो ! जो किसी के लिए बुरा सोचता है, पहले उसी का बुरा होता है।

गीदड़ ने सोचा था कि चालाकी से कुक्कड़ को अपने जाल में फंसा लूँगा; किन्तु हुआ उल्टा। गई अपनी ही जान।

इसलिए कभी किसी के लिए बुरा मत सोचो, बुरा मत कहो, बुरा मत करो।

न इधर के रहे, न उधर के रहे

एक बार पक्षियों और चौपायों में युद्ध छिड़ गया।

पक्षियों के सेनापति गरुड़ बने और चौपायों के सिंह महाराज।

दोनों ही सेनापति बड़े चतुर थे। अपनी-अपनी सेना सजाकर दोनों पक्ष मैदान में आमने-सामने आ डटे। युद्ध शुरू हो गया।

चौपायों के शक्तिशाली होने पर भी, जब पक्षी ऊपर से उड़कर हमला करते, तो उनका कोई वश न चलता।

एक बार बाज ने अपने तीखे पंजों और चोंच से चौपायों के सेनापति सिंह की आँखें ही निकाल डालीं। अब तो चौपायों की सेना में बड़ी खलबली मची और लगे सब इधर-उधर भागने। हिरण और खरगोश सबसे पहले भाग निकले। गीदड़ गण आगे ही जान

बचाकर लड़ रहे थे। इस आक्रमण से तो वे भाग ही खड़े हुए। देखते-ही-देखते चौपायों की सारी सेना तितर बितर हो गई।

पक्षियों की फौज में खुशी के गीत गाए जाने लगे। वे अपने आप में फूले नहीं समा रहे थे।

इतने में एक चमगादड़ जो अब तक डर के मारे कहीं छिपा हुआ था, पक्षियों में आकर मिल गया और नाचने-गाने लगा। सारे पक्षी इस नए साथी को, जिसे उनमें से किसी ने भी लड़ते नहीं देखा था, अब देख-कर आश्चर्य करने लगे।

कौए ने गिद्ध से कहा—"यह शत्रु-सेना का कोई जासूस है। दादा, इसका ध्यान रखना चाहिए।" यह बात चमगादड़ के कानों में पड़ी। वह लड़ाई में की गई अपनी बहादुरी की डींग हांक रहा था।

उसने कहा—"वाह! यह भी कोई बात है। मैं तो तुम्हारी ही जात-पात का हूँ। देखो मेरे पंखों को। मैं कोई जाति-द्रोह थोड़े ही कर सकता हूँ। चौपायों से मेरा क्या सम्बन्ध?" उसकी बात पर सबको विश्वास हो गया।

चमगादड़ की सारी बातें चौपायों तक पहुँच गईं।

सिंह सेनापति ने अपने भागते हुए सिपाहियों को

इकट्ठा कर के पक्षियों पर इस बार बड़ा ही जोरदार हमला किया।

पक्षियों के राजा थे मोर ! मोर नाचता बहुत अच्छा है। कूजता हुआ भी बड़ा सुन्दर लगता है। और देखने में उस जैसा रंग-बिरंगा दूसरा कोई भी पक्षी नहीं है। परन्तु इतने सब गुणों के होते हुए भी उसमें एक बात की कमी है—वह यह कि मोर लम्बी उड़ान नहीं उड़ सकता।

चौपायों को इस बात का पता था। उन्होंने सलाह करके सीधे ही राजा पर आक्रमण कर दिया।

पक्षियों ने अपने राजा की रक्षा के लिए पूरा प्रयत्न किया पर सफलता न मिली। राजा मारा गया।

अब तो युद्ध का पासा पलट गया। चौपाए खूब खुशियाँ मानने लगे। इस विजय से वे फूले न समाए।

पक्षियों की हार होते देख चमगादड़ झट भाग खड़ा हुआ और चौपायों में जा मिला। और वहाँ भी लगा अपनी बहादुरी की डींग हांकने—"मैंने यह किया, मैंने वह किया !"

किसी ने कह दिया—"यह तो पक्षी है।" चमगादड़ झट बोल उठा—"बिल्कुल नहीं। पक्षी अण्डे देते

हैं, परन्तु हम बच्चे। और फिर पक्षियों की भांति हमारे पंख भी नहीं हैं। मैं तो चौपाया हूँ चौपाया।"

अब तो गीदड़ से न रहा गया। उसने कहा, "झूठ बोलते हो! पिछली बार तो तुम पक्षियों में जा मिले थे, अब हम जीते तो हमारी ओर आ गए!"

उन्होंने उसे धक्के मारकर भगा दिया। अब वह पक्षियों की ओर भी कैसे जाता! चौपायों और पक्षियों में मेल-मिलाप हो गया। दोनों ने निश्चय किया कि चमगादड़ को कोई अपने में न मिलाए। अब तो चमगादड़ को बड़ी लज्जा आई। तब से लेकर आज तक लज्जा के कारण चमगादड़ न तो चौपायों को अपना मुँह दिखाता है और न पक्षियों को। वह दिन भर छिपा रहता है और रात को जब सब सो जाते हैं तो निकलता है।

◇ ◇ ◇

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

- लाखों में एक ०.५०
- आचरण कैसा हो ? ०.५०
- बड़ों का बचपन ०.३७
- बालकों के गीत ०.५०
- सच्चा दान (भारत सरकार द्वारा स्वीकृत) ०.७५
- अच्छी आदतें १.००
- जैसे चाहो वैसे बन जाओ १.००
- मेरा देश है यह ! (दिल्ली प्रशासन द्वारा पुरस्कृत) १.००
- शकुन्तला ०.७५
- शैतान की मौत ०.७५
- बाहर कहां खोजे बन्दे ! ०.७५
- राजा भोज (भारत सरकार द्वारा पुस्कृत) १.००
- कूड़े से करोड़ों (पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत) ०.७५
- तपेदिक से बचिये ०.८५
- कहानी की कहानी ०.६५
- मिर्च-मिठाई (नाटक) ०.७५
- ज्ञान की कहानियाँ (भारत सरकार द्वार पुरस्कृत) ०.८७
- अच्छा नागरिक १.२५
- भगवान् बुद्ध ०.७५
- पंजाब की प्रेमकथाएँ २.००